Timax®

अलंकार

हिंदी व्याकरण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

NEP 2020
ENHANCED EDITION

8

अलंकार हिंदी व्याकरण-8

अभ्यास–1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. मौखिक 2. 14 सितंबर, 1949 को 3. ये सभी भाषाएँ 4. तीन 5. रोमन **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(ग)** 1. भाष् 2. राजभाषा 3. लिपि 4. व्याकरण 5. आर्य **(घ)** स्वयं करें। **(ङ) 1.** भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों एवं भावों को परस्पर बोलकर या लिखकर प्रकट करता है। मानव समाज के लिए भाषा का विशेष महत्व है। वह भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। भाषा संप्रेषण का मुख्य साधन है। **2.** भाषा दो प्रकार की होती है–(क) मौखिक (ख) लिखित। **3. मातृभाषा**–इस भाषा को बालक अपने परिवार में सीखता है। बच्चा माँ के मुख को देखकर और ध्वनियों को सुनकर मातृभाषा सीखता है। **राष्ट्रभाषा**–राष्ट्रभाषा वह होती है, जिसे देश के अधिकांश नागरिकों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। हमारे संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। **राजभाषा**–राजभाषा का प्रयोग सरकारी कामकाज में होता है। 14 सितंबर, 1949 को संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई। परंतु अंग्रेज़ी को सहभाषा के रूप में जारी रखा गया है। **4.** भाषा के लिखित रूप को लिपि कहते हैं। भाषा का लिखित रूप उसके ध्वनि-चिह्नों से निर्मित होता है। अत: ध्वनि-चिह्न ही लिपि कहलाते हैं। **5.** व्याकरण वह शास्त्र है, जो भाषा को शुद्ध रूप में बोलना, पढ़ना व लिखना सिखाता है। व्याकरण भाषा के नियम बनाता है। इसके ज्ञान के बिना किसी भी भाषा का प्रयोग शुद्ध रूप में नहीं किया जा सकता।

अभ्यास–2 वर्ण-विचार

(क) 1. ह्रस्व स्वर 2. अयोगवाह 3. दीर्घ स्वर 4. व्यंजन 5. संयुक्त व्यंजन **(ख) 1.** संयुक्त व्यंजन **2.** अतिरिक्त **3.** 52 **4.** मात्राएँ **5.** उच्चारण **(ग)** 1. ओष्ठ्य 2. मूर्धन्य 3. नासिक्य 4. दंतोष्ठ्य **(घ)** व **(ङ)** स्वयं करें। **(च) 1. स्वर**–जो वर्ण बिना किसी वर्ण की सहायता के बोले जा सकते हैं, वे स्वर कहलाते हैं; जैसे–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। **व्यंजन**–जिन वर्णों के उच्चारण में हमारी साँस मुख के किसी अवयव से बाधित होती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। ये व्यंजन स्वर की सहायता से ही बोले जाते हैं। मूल रूप से व्यंजन स्वर-रहित होते हैं; जैसे-क्, ख्, ग्, घ् आदि। **2. अनुस्वार**–जिन वर्णों के उच्चारण में हवा केवल नाक से निकलती है और उच्चारण थोड़ा जोर से होता है, उनके ऊपर अनुस्वार (ं) का

चिह्न लगाया जाता है; जैसे–पंत, कंठ, दंत आदि। **अनुनासिक**–जो स्वर मुख और नाक से बोले जाते हैं, वे 'अनुनासिक' कहलाते हैं। ये चंद्रबिंदु (ँ) के रूप में वर्ण पर लगाए जाते हैं; जैसे–चाँद, माँद, काँपना, हाँफना, भाँपना, भाँति आदि। **3.** दो व्यंजनों के एक-साथ प्रयोग को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। हिंदी में संयुक्त व्यंजन अनेक प्रकार से लिखे जाते हैं–क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ऐसे संयुक्त व्यंजन हैं, जिनका रूप मान्य हो चुका है। इन्हें वर्णमाला में भी स्थान प्राप्त है।

अभ्यास–3 संधि

(क) 1. सु + आगत 2. सदा + एव 3. मनः + बल 4. प्रति + एक 5. सत्य + आग्रह **(ख)** 1. अतएव 2. सूक्ति 3. मनोकामना 4. दुष्कर्म 5. दिगंत 6. नरेन्द्र 7. उल्लेख 8. गर्वोक्ति 9. निष्काम 10. सज्जन 11. विषम 12. जगन्नाथ 13. स्वेच्छा 14. अत्यधिक 15. चरणामृत 16. नीरोग **(ग)** व **(घ)** स्वयं करें। **(ङ) 1.** दो वर्णों के मेल से हुए विकार (परिवर्तन) को संधि कहते हैं। **2.** संधि के तीन भेद हैं–1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि **3. स्वर संधि**–जब दो स्वर एक-दूसरे के समीप आने पर आपस में मिलकर एक होते हैं, तो उस रूपांतरण को स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के पाँच प्रकार हैं–**(*i*) दीर्घ संधि**–यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के आगे क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाए तो दोनों मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ बन जाते हैं।

अभ्यास–4 शब्द-विचार

(क) 1. गुलाब 2. अशांत 3. रूढ़ 4. योगरूढ़ 5. काला 6. पारिभाषिक **(ख)** व **(ग)** स्वयं करें। **(घ) 1.** वर्णों के सार्थक और सही क्रम से शब्द बनते हैं। शब्द जब वाक्यों में प्रयुक्त हो जाते हैं, तो वे पद कहलाते हैं। ये उपसर्ग, लिंग, वचन, कारक आदि के कारण अपना रूप बदल लेते हैं; जैसे–लड़का पत्र लिखता है। लड़के पत्र लिखते हैं। **2.** रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं–(क) **रूढ़ शब्द** (मूल शब्द) पुस्तक (ख) **यौगिक शब्द**-सेनापति (ग) **योगरूढ़ शब्द**-जलज **3. तत्सम शब्द**–हिंदी में बहुत सारे शब्द संस्कृत से उसी रूप में ग्रहण कर लिए गए हैं, जिस रूप में उनका प्रयोग संस्कृत में होता है। इसलिए उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं; जैसे–सूर्य, स्वर्ण, प्रकाश, अग्नि, पुष्प आदि। **तद्भव शब्द**–संस्कृत के वह शब्द, जो हिंदी में परिवर्तित रूप में प्रचलित हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं; जैसे–दूध (दुग्ध), आग (अग्नि), पत्ता (पत्र), सात (सप्त), काम (कर्म), बरस (वर्ष) आदि। **4.**

विकारी शब्द–विकारी शब्द वे होते हैं, जिनमें वाक्य-प्रयोग के समय लिंग, वचन, कारक, काल के कारण विकार (परिवर्तन) आ जाता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया **अविकारी शब्द**–अविकारी शब्द वे होते हैं, वाक्य-प्रयोग में जिनके मूल रूप में कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता। इन्हें अव्यय भी कहा जाता है। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक , विस्मयादिबोधक, निपात **5. देशज शब्द**–झंझट, थप्पड़, ठोकर, भोंपू; **विदेशी (आगत) शब्द**–अख़बार, आदमी, कुरता, अपील

अभ्यास–5 उपसर्ग

(क) 1. दुर् 2. निर् 3. सम् 4. अनु **(ख)** सत्, प्र, वद, स्व, आ, वि, अनु, उन, अप, दुः (ग) दुस्साहस, बलवान, निश्छल, प्रभाव, पराधीन, अपशकुन, दुस्साध्य, सर्वोत्तम, सुजन, अभाग्य **(घ)** व **(ङ)** स्वयं करें। **(च)** 1. जो शब्दांश शब्दों से पूर्व जुड़कर, उनके अर्थ में विशेषता ला देते हैं या अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहा जाता है। 2. हिंदी में कई प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–(क) अनु, अप (ख) बिन, कर (ग) खुश, ना (घ) सब, हैड

अभ्यास–6 प्रत्यय

(क) 1. आऊ 2. इया 3. आलू 4. ई 5. आका **(ख)** व **(ग)** स्वयं करें। **(घ) 1.** जो शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या विशेषता ला देते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहा जाता है। **मनुष्य**–मनुष्यत्व, मनुष्यता **पढ़**–पढ़ाई, पढ़ाकू **2. तद्धित प्रत्यय**–ऐसे प्रत्यय, जो संज्ञा आदि शब्दों के अंत में जोड़े जाते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे–मामा+एरा=ममेरा, बूढ़ा+आपा=बुढ़ापा आदि। 'एरा' और 'आपा' तद्धित प्रत्यय हैं। **कृत् प्रत्यय**–जो शब्दांश क्रिया के अंत में जोड़े जाते हैं, अर्थात् जो क्रिया की धातु में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं; जैसे–चढ़ (ना) + आई = चढ़ाई। यहाँ 'आई' कृत् प्रत्यय है।

अभ्यास–7 समास

(क) 1. तत्पुरुष 2. द्विगु 3. द्वंद्व 4. अव्ययीभाव 5. तत्पुरुष **(ख)** व **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** 1. नीलकंठ, बहुब्रीहि 2. दाल-रोटी, द्वंद्रव 3. आजन्म, अव्ययीभाव 4. त्रिमूर्ति, द्विगु 5. तुलसीकृत, तत्पुरूष 6. नीलकमल, कर्मधारय **(ङ) 1.** दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर लिखने की विधि को समास कहते हैं। समास से संक्षिप्तता और शैली में उत्कृष्टता एवं सटीकता आती है; जैसे–'राजा का पुत्र' के

स्थान पर 'राजपुत्र' कहना अधिक उपयुक्त है। **2.** समास के छह भेद हैं– (i) अव्ययीभाव समास (ii) तत्पुरुष समास (iii) द्विगु समास (iv) द्वंद्व समास (v) कर्मधारय समास (vi) बहुब्रीहि समास **3. कर्मधारय समास**–इस समस्तपद के दोनों पदों में विशेषण–विशष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध होता है। **बहुब्रीहि समास**–जिस समस्तपद के दोनों पद प्रधान न होकर किसी तीसरे पद विशेष व्यक्ति के बारे में बताएँ, वहाँ बहुब्रीहि समास होता है।

अभ्यास–8 शब्द-भंडार

(क) 1. वसन 2. अल्पज्ञ 3. सरल (ख) 1. पंकज, सरोज, नीरज 2. आग, अनल, पावक 3. वायु, पवन, समीर 4. अचला, धरती, भूमि 5. जलद, नीरद, पयोद **(ग)** सज्जन, लिखित, निरक्षर, श्वेत, दुर्भाग्य नासिक, सुगम, अनिच्छा, प्राकृतिक, दीर्घायु **(घ)** व **(ङ)** स्वयं करे। (च) 1. निराकार 2. दुष्प्राप्य 3. बाचाल 4. इतिहासज्ञ **(छ) 1.** जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं जैसे–1. **आँख**–चक्षु, लोचन, नेत्र, दृग, नयन 2. **आँख**–चक्षु, लोचन, नेत्र, दृग, नयन। **आकाश**–गगन, व्योम, आसमान, नभ, अंबर **2.** (i) **अस्त्र**–फेंककर चलाया जाने वाला हथियार **शस्त्र**–हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार (ii) **अपराध**–सामाजिक कानून का उल्लंघन **पाप**–धार्मिक नियमों का उल्लंघन **3.** (i) श्रीराम, जैसा, प्रजापालक (ii) अर्जुन, जैसा धनुर्धर।

अभ्यास–9 संज्ञा

(क) 1. मधुरता 2. मीठा, गरीब 3. व्यक्तिवाचक 4. समूहवाचक **(ख)** 1. पढ़ाई 2. बुढ़ापा 3. मनुष्यता 4. चतुराई 5. मिठास **(ग)** चतुराई, लड़कपन, बुनाई, बचपन, पढ़ाई, शत्रुता, पंडिताई, मिषस, सुंदरता, लड़ाई **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ **(ङ)** स्वयं करें। **(च) 1.** किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव आदि के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। जैसे–महेश, गंगा, गाय, सेब, मुंबई, प्रेम, ईमानदारी आदि। **2.** संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं–1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**–राघव, कामधेनु 2. **जातिवाचक संज्ञा**–कुत्ता, छात्र 3. भाववाचक संज्ञा–सत्य, अहिसा **3. जातिवाचक संज्ञा**–जो संज्ञा शब्द किसी प्राणी, वस्तु, स्थान की पूरी जाति या समूह का बोध कराते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। **4. व्यक्तिवाचक संज्ञा**–जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–(क) राघव बहुत होशियार है। (व्यक्ति-विशेष)

(ख) कामधेनु स्वर्ग में मिलती है। (गाय-विशेष) **5. भाववाचक संज्ञाओं की रचना**–जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और अव्यय से कुछ शब्द तो मूल रूप से भाववाचक संज्ञा होते है; जैसे-विनय, शांति, अहिंसा, सत्य, जीवन, मृत्यु, कृपा आदि।

अभ्यास–10 लिंग

(क) 1. गाय-बैल 2. बालक-बालिका 3. नर-नारी **(ख)** 1. सिंह, हथिनी 2. फूफा 3. संपादिका 4. बुढ़ियाँ, युवतियाँ, किशोरियाँ **(ग)** व **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** 1. शब्द का वह रूप, जो किसी शब्द के पुरुष या स्त्री जाति के होने का बोध कराए, लिंग कहा जाता है। 2. हिंदी में लिंग के दो भेद होते है–(क) पुल्लिग (ख) स्त्रीलिंग **(क) पुल्लिग**–ऐसे शब्द जो पुरुष जाति का बोध कराते हैं, पुल्लिग कहे जाते हैं; जेसे–शेर, भाई, पिता आादि। (ख) **स्त्रीलिंग**–ऐसे शब्द जो स्त्री जाति का बोध करतो हैं, स्त्रीलिंग कहे जाते हैं; जैसे–शेरनी, भाभी, माता आदि।

अभ्यास–11 वचन

(क) 1. चिड़ियाँ 2. चुहियों 3. योद्धा 4. बच्चों 5. बच्चियें **(ख)** 1. सिपाहियों, डाकुओं 2. चुहियों, बिल्लियों 3. प्रदर्शनकारियों, गोलियों 4. चारों, मकानों 5. बच्चो, पुस्तकों **(ग) व (घ)** स्वयं करें। **(ङ)** 1. एकवचन 2. एकवचन 3. बहुवचन 4. बहुवचन 5. एकवचन 6. बहुवचन **(च)** 1. शब्द के जिस रूप में उसके एक या एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। 2. हिंदी में दो वचन होते हैं– (क) एकवचन व (ख) बहुवचन (क) **एकवचन**–शब्द का वह रूप, जिससे उसके संख्या या गिनती में एक होने का बोध हो, एकवचन कहलाता हैं; (ख) **बहुवचन**– शब्द का वह रूप, जिससे उसके संख्या या गिनती में एक से अधिक होने का बोध हो, बहुवचन कहलाता है; जैसे–तितलियाँ, पुस्तकें, गुड़ियाँ आदि।

अभ्यास–12 कारक

(क) 1. अपादान कारक 2. अधिकरण कारक 3. संप्रदान कारक **(ख)** 1. में 2. से 3. से 4. पर 5. से 6. ने **(ग)** 1. संप्रदान 2. करण 3. करण 4. अधिकरण 5. कर्म **(घ)** 1. कर्ता 2. कर्ता 3. संबंध 4. करण 5. कर्म 6. करण 7. अपादान 8. संप्रदान 9. संबोधन 10. अधिकरण **(ङ)** स्वयं करें। **(च) 1.** संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया, अन्य संज्ञा या सर्वनाम से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। **2.** कारक-चिह्नों (ने, को, से, के लिए, का, की, के, पर, रा, री, रे

आदि) को परसर्ग या विभक्ति चिह्न या विभक्तियाँ भी कहते हैं। कारक-चिह्नों के अभाव में प्रस्तुत पदों का संबंध ठीक प्रकार से स्पष्ट नहीं हो पाता। **उदाहरण–**

	कारक-चिह्न सहित वाक्य	**कारक-चिह्न रहित वाक्य**
1.	लड़कों ने दूध पिया।	लड़कों दूध पिया।
2.	माधव का घर उधर है।	माधव घर उधर है।
3.	दादाजी ने मेरे लिए खिलौना खरीदा।	दादाजी मेरे खिलौना खरीदा।
4.	कबूतर छत पर बैठे हैं।	कबूतर छत बैठे हैं।
5.	पेड़ से फल गिरा।	पेड़ फल गिरा।

3. स्वयं करें। 4. (क) करण कारक–जिस साधन की सहायता से कर्ता क्रिया करता है, वह करण कारक होता है; जैसे–(क) लड़कों ने छड़ी से साँप मारा। (ख) अमर साइकिल के द्वारा स्कूल गया। यहाँ 'छड़ी' तथा 'साइकिल' वे साधन हैं, जिनसे क्रिया हुई। अत: ये करण कारक हैं। करण कारक के विभक्ति चिह्न 'से' तथा 'के द्वारा' हैं। **(ख) अपादान कारक**–संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिसमें किसी वस्तु या पदार्थ के अलग होने का बोध होता है, वह अपादान कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'से' है; जैसे–(क) पेड़ से पत्ते गिरे। (ख) पर्वतों से नदियाँ निकलती हैं। यहाँ 'पेड़' तथा 'पर्वतों' से अलग होने की क्रिया हो रही है। अत: 'पेड़' तथा 'पर्वत' अपादान कारक हैं। **(ग) संप्रदान कारक**–कर्ता जिसके लिए कुछ कार्य करता है या जिसे कुछ देता है, वह संप्रदान कारक होता है; जैसे–(क) छात्र परीक्षा के लिए पढ़ रहे हैं। (ख) रोगी को औषधि दो। यहाँ 'परीक्षा' तथा 'रोगी' के लिए क्रिया की जा रही है। अत: ये संप्रदान कारक हैं। संप्रदान कारक के विभक्ति-चिह्न हैं–को, के लिए, के हेतु, के वास्ते।

अभ्यास–13 सर्वनाम

(क) 1. उत्तम पुरुष 2. प्रश्नवाचक 3. अन्य पुरुषवाचक 4. अनिश्चयवाचक **(ख)** 1. आप 2. क्या 3. किसी 4. यह 5. स्वयं **(ग)** 1. अनिश्चयवाचक 2. अनिश्चयवाचक 3. मध्यम पुरुषवाचक 4. प्रश्नवाचक 5. निजवाचक **(घ) 1.** संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहा जाता है ।

	स्तंभ 'क'	**स्तंभ 'ख'**
1.	**रवि** आठवीं कक्षा का छात्र है।	**वह** गृहकार्य करता है।
2.	**रवि के पिताजी** डॉक्टर हैं।	**वे** रोगी को देख रहे हैं।

स्तंभ 'क' में रंगीन शब्द संज्ञा शब्द हैं।

2. मैं तुमसे क्या कहूँ? मैं कुछ नहीं कह सकता। **3. निश्चयवाचक सर्वनाम**–किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, घटना अथवा कर्म के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम

निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–(क) सामने जो हरा-भरा खेत लहरा रहा है, वह हमारा है। (ख) गीता का स्कूल वह नहीं, यह है। (ग) वे लोग जो सामने बैठे हैं, वे कौन हैं? (घ) वे आदमी जो वहाँ खड़े हैं, उन्हीं से रास्ता पूछा लो। (ङ) बीच की कुर्सी पर जो व्यक्ति बैठा है, रवि उसी का बेटा है। इस प्रकार 'वह', 'यह', 'वे', 'उन्हीं' तथा 'उसी' सर्वनाम शब्द निश्चित रूप से क्रमशः 'खेत', 'स्कूल', 'लोग', 'आदमी', 'व्यक्ति' के बदले प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम पद हैं। ये निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**– किसी अनिश्चित व्यक्ति, अनिश्चित वस्तु या घटना अथवा अनिश्चित स्थान के बदले प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम पद अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–(क) शायद कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है। (ख) बाज़ार से कुछ खरीदकर खा लूँगा। (ग) मैं किसी से कुछ भी नहीं लेता।

अभ्यास–14 विशेषण

(क) 1. गुणवाचक 2. पढ़ाकू 3. सार्वनामिक (ख) स्वयं करें। (ग) 1. गुरूतर, गुरूतम 2. अधिकतर, अधिकतम 3. निम्नतर, निम्नतम 4. उच्चतर, उच्चतम 5. तीव्रतर, तीव्रतम **(घ) विशेषण**–1. इलाहाबादी 2. तीन 3. चार 4. कोई **भेद**–1. व्यक्तिवाचक 2. संख्यावाचक 3. संख्यावाचक 4. सार्वनामिक **(ङ)** 1. निश्चित 2. अनिश्चित 3. निश्चित 4. अनिश्चित **(च)** 1. कोई 2. कोई 3. कुछ 4. कुछ, मुझे **(छ) 1.** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषता कहते हैं। (क) नमन ने लाल कमीज़ पहन रखी है। (ख) आम मीठे हैं। (ग) तुम्हारा छोटा बेटा नटखट है। (घ) मावा बनाने के लिए तीन लीटर दूध चाहिए। (ङ) मुझे थोड़ा पानी दे दो। (च) वे लंबे हैं। **2.** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जिस शब्द (संज्ञा) की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते है। **3. विशेषण के पाँच भेद हैं**–1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण 3. परिमाणवाचक विशेषण 4. सार्वनामिक विशेषण 5. व्यक्तिवाचक विशेषण **4.** जो विशेषण विशेषणों की विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं; जैसे–1. रवि बहुत चतुर है। (बहुत-प्रविशेषण, चतुर-विशेषण) **5.** विशेषणों की तीन तुलनात्मक अवस्थाएँ होती हैं। ये निम्नलिखित हैं–**मूलावस्था**– इसमें तुलना नहीं होती। यह मूलावस्था होती है; जैसे– सुंदर, लघु **उत्तरावस्था**–इसमें दो व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं की विशेषता की तुलना की जाती है। इस तुलना में प्रायः 'तर' लगाया जाता है; जैसे-सुंदरतर, लघुतर। **उत्तमावस्था**–इसमें दो से अधिक व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं की विशेषता की तुलना की जाती है तथा एक को सबसे अधिक बताया जाता है; जैसे– सुंदरतम, लघुत्तम।

अभ्यास–15 क्रिया

(क) 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. पूर्वकालिक 4. प्रेरणार्थक 5. सकर्मक **(ख)** 1. हँसते हैं। 2. जाओगे 3. आएँगे 4. पी ली होगी 5. पढ़ी **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** 1. उठकर 2. खाकर 3. देकर 4. देखकर (ङ) लतियाना, गर्माना, शर्माना, सठियाना, धकियाना, झुठलाना (च) सोकर, लिखकर, पढ़कर, धोकर, चलकर, खाकर, दौड़कर, जागकर **(छ) 1.** किसी कार्य, घटना या अस्तित्व का बोध कराने वाले शब्द को क्रिया कहते हैं। **2.** क्रिया के अभाव में वाक्य पूर्ण नहीं होता। **3.** कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद होते हैं– (क) सकर्मक क्रिया (ब)अकर्मक क्रिया। **(क) सकर्मक क्रिया**–वाक्य में जिस क्रिया के साथ कर्म रहता है अथवा उसके होने की संभावना रहती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रिया कर्ता के द्वारा ही की जाती है, परंतु उसके कार्य का फल कर्म पर पड़ता है; जैसे–1. नेहा गीत गाती है। 2. मदन खीर खाता है **(ख) अकर्मक क्रिया**–अकर्मक का अर्थ है– 'बिना कर्म का'। जिन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग नहीं किया जाता तथा क्रियाओं के व्यवहार का फल उनके कर्ता पर पड़ता है, उन वाक्यों की क्रियाएँ अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं; 1. बालक रोता है। 2. कुत्ता भौंकता है।

अभ्यास–16 काल

(क) 1. वर्तमान काल 2. संभाव्य भविष्यत् 3. पूर्ण भूत 4. भविष्यत् काल 5. छह **(ख)** 1. भविष्यत् काल 2. भूत काल 3. वर्तमान काल **(ग), (घ), (ङ)** और **(च)** स्वयं करें। **(छ) 1.** क्रिया के रूप में कर्म के करने, होने या न होने के समय का बोध होता है। इस समय को ही क्रिया का काल कहते हैं। **2.** काल के निम्नलिखित तीन भेद हैं–1. भूत काल–वह पढ़ता था। 2. वर्तमान–काल वह पढ़ रहा है। 3. भविष्यत् काल–वह पढ़ेगा। **3.** क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में होने का बोध हो, वह भूतकाल की क्रिया कहलाती है तथा वह समय भूत काल कहलाता है; जैसे–(क) दादा जी ने अभी-अभी खाना खाया है। (ख) हमारे दादा जी ने यह मकान बनवाया था। **4.** भूतकाल के छह भेद होते हैं–(*i*) सामान्य भूत काल, (*ii*) आसन्न भूत काल, (*iii*) पूर्ण भूत काल, (*iv*) अपूर्ण भूत काल, (*v*) संदिग्ध भूत काल, (*vi*) हेतुहेतुमद् भूत काल। ***(i)* सामान्य भूत काल**–जिस क्रिया से बीते हुए काल के सामान्य रूप का बोध होता है, उसे सामान्य भूत कहते हैं; जैसे–(क) मीना चली गई। (ख) रवि ने सोचा। (ग) मजदूर ने साँप को मारा। (घ) सिपाही ने गोली चलाई। ***(ii)* आसन्न भूत काल**–क्रिया के जिस रूप से उसके अभी-अभी समाप्त होने का बोध हो, उसे आसन्न भूत कहते हैं; जैसे–(क) वह अभी गया है। (ख) उसने खाना खाया है। (ग) मैंने यह पार्क देखा है। (घ) उसने मुझसे मित्रता की है। ***(iii)* पूर्ण भूत काल**–जो क्रिया यह

बोध कराती है, कि कोई कार्य बहुत पहले समाप्त हो चुका था, वह पूर्ण भूत की क्रिया कहलाती है; जैसे–(क) राम ने बाली को मारा था। (ख) भगवान कृष्ण बहुत मधुर बाँसुरी बजाया करते थे। ***(iv)* अपूर्ण भूत काल**–भूत काल की जिस क्रिया से यह बोध हो, कि कार्य भूत काल में आरंभ हो चुका था, पर वह कब समाप्त हुआ, इसका बोध न हो; ऐसी क्रिया का काल अपूर्ण भूत कहलाता है; जैसे– (क) दादा जी तबला बजा रहे थे। (ख) रीमा नृत्य कर रही थी। ***(v)* संदिग्ध भूत काल**–भूत काल की जिस क्रिया से उसके पूरा होने का काल संदिग्ध हो, उसे संदिग्ध भूत कहते हैं; जैसे–(क) उसने अपना पाठ याद कर लिया होगा। (ख) बहेलिए ने कबूतर को पकड़ लिया होगा। ***(vi)* हेतुहेतुमद् भूत काल**–भूत काल की जो क्रिया किसी शर्त पर निर्भर हो, उसे हेतुहेतुमद् भूत कहते हैं; जैसे–(क) मोहित पढ़ता, तो अवश्य पास हो जाता। (ख) वह मुझे मिलता, तो मैं उससे खूब बातें करता।

अभ्यास–17 वाच्य

(क) 1. कर्तृ वाच्य 2. भाव वाच्य 3. तीन **(ख)** 1. भाव वाच्य 2. कर्म वाच्य 3. कतृ वाच्य 4. भाव वाचक 5. कर्म वाच्य **(ग)** 1. नौकर द्वारा घरकी सफाई हो रही है। 2. प्रधानमंत्री द्वारा भवन का उद्घाटन किया गया है। 3. सारे देशवासियों के द्वारा गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। 4. मुझसे चला नहीं जाता है। 5. सुमन से दिल्ली जाया गया। **(घ)** 1. उससे लिखा नहीं जाता। 2. मुझसे चला नहीं जाता। 3. दादी से सोया नहीं जाता। 4. उससे खड़ा नहीं हुआ जाता। 5. बालक से बैठा नहीं जाता। **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(च) 1.** उस रूप रचना को वाच्य कहते हैं, जिससे यह पता चलता है, कि क्रिया को मूल रूप से चलाने वाला कर्ता है, कर्म है या भाव है। **2.** वाच्य के तीन भेद माने जाते हैं– 1. कर्तृ वाच्य 2. कर्म वाच्य 3. भाव वाच्य। **कर्तृ वाच्य–** इस प्रकार के वाक्यों में क्रिया को करने वाला कर्ता प्रधान होता है और उसी के अनुसार क्रिया चलती है; जैसे–(क) यश सो रहा है। (ख) माया पुस्तक पढ़ रही है। (ग) मैंने दूध पी लिया है। (घ) लड़कियाँ सेब खाती हैं। **कर्म वाच्य**–इस प्रकार के वाक्यों में क्रिया को चलाने वाला कर्म होता है। उसी की प्रधानता होती है। जैसे–(क) मुझसे किताब नहीं पढ़ी जाती। (ख) मेरे द्वारा ग्रंथ लिखा जा रहा है। (ग) यह उपन्यास प्रेमचंद द्वारा लिखा गया है। (घ) रवि द्वारा दरवाज़ा खोला जा रहा है। (इन वाक्यों में किताब, ग्रंथ, उपन्यास, दरवाज़ा कर्म हैं और उन्हीं की प्रधानता है। क्रिया उन्हीं के अनुसार चल रही है।) **भाव वाच्य**–इस प्रकार के वाक्यों में कर्ता और कर्म दोनों अप्रधान होते हैं। क्रिया भाव के अनुसार चलती है। भाव वाच्य केवल अकर्मक क्रिया का रूप होता है; जैसे–(क)मुझसे चला नहीं जाता। (ख) यहाँ सोया नहीं जाता। (ग) लड़कों से खड़ा नहीं हुआ जाता। (घ) मुझसे लड़ाई नहीं की जाती।

अभ्यास-18. क्रिया-विशेषण

(क) स्वयं करें। **(ख)** 1. मूसलाधार 2. परसों 3. सदा 4. अचानक 5. तक 6. धीरे-धीरे 7. कब से 8. पूर्णत: 9. अब 10. ज्यादा **(ग)** 1. उधर 2. आज 3. अच्छा 4. प्रतिदिन 5. तेज 6. आजकल 7. ध्यानपूर्वक 8. भीतर 9. जल्दी-जल्दी 10. थोड़े **(घ)** 1. रीतिवाचक 2. परिमाणवाचक 3. कालवाचक 4. परिमाणवाचक 5. रीतिवाचक 6. कालवाचक **(ङ)** **1.** जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, वे क्रिया-विशेषण कहे जाते हैं; जैसे–(क) रमेश कल दौड़ा। (ख) वह यहाँ दौड़ा। (ग) वह तेज़ दौड़ा। (घ) वह बहुत दौड़ा। **2.** क्रिया-विशेषण के चार भेद होते हैं–**(क) कालवाचक क्रिया-विशेषण**–जो शब्द क्रिया के होने के समय का बोध कराते हैं, उन्हें कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे–(क) हम प्रतिवर्ष शिमला जाते हैं। (ख) वह प्रतिदिन सैर करता है। **(ख) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण**–जो शब्द क्रिया के होने के स्थान का बोध कराते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे–(क) श्रीमान जी! आप यहाँ बैठिए। (ख) भाई साहब, आप भीतर चलिए। **(ग) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण**–जिन शब्दों से क्रिया के होने के परिमाण (मात्रा) का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे–(क) कम खाओ, ताकि पचा सको। (ख) सवेरा हो गया। उठ जाओ। अधिक सोना ठीक नहीं। **(घ) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण**–जो शब्द क्रिया के होने की रीति या विधि बताते हैं; उन्हें रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे–(क) मंत्री के जाते ही भीड़ धीरे-धीरे छँटने लगी। (ख) आजकल लगातार वनों की कटाई की जा रही है।

अभ्यास-19. संबंधबोधक

(क) 1. मेरे पास 2. के पीछे 3. के सामने 4. के आगे 5. के ऊपर **(ख)** 1. के पास 2. की ओर 3. के बाद 4. से पहले 5. के सामने 6. के समान 7. चारों तरफ **(ग)** स्वयं करें **(घ)** 1. के नीचे 2. के पीछे 3. के अलावा 4. के कारण 5. के मारे 6. के सामने 7. के पास 8. के बारे **(ङ)** **1.** ऐसे शब्द, जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होकर उनका संबंध वाक्य में अन्य संज्ञा, सर्वनाम शब्दों से बताते हैं, वे संबंधबोधक कहलाते हैं। उदाहरण–की जगह, के बिना, के कारण, के मारे, के सामने, के नीचे, के ऊपर, के अंदर, से पहले, की तरफ आदि संबंधबोधक हैं। **2.** स्वयं करें।

अभ्यास-20. समुच्चयबोधक

(क) 1. नहीं तो 2. इसलिए 3. बल्कि 4. कि 5. इसलिए **(ख)** 1. और 2. लेकिन 3. या 4. कि 5. पर **(ग)** 1. अपने समय का सदुपयोग करो नहीं तो पछताओगे। 2. पिताजी अपने कार्यालय नहीं जा सके क्योंकि सुबह से वर्षा हो रही थी। 3. सब जानते हैं कि धर्म की सदा विजय होती है। 4. उसने किसी की एक न सुनी और वह आगे बढ़ता गया। 5. उसने अपने पिताजी की सीख नहीं मानी तो वह अनुत्तीर्ण हो गया। **(घ)** जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों व वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, समुच्चयबोधक कहलाते हैं। समुच्चयबोधक के दो भेद हैं–1. समानाधिकरण 2. व्यधिकरण।

अभ्यास-21. विस्मयादिबोधक

(क) 1. नालायक 2. ओहो 3. वाह 4. अरे 5. अहा **(ख)** 1. हाँ! 2. गोपी! 3. बिल्कुल! 4. होह! 5. वाह! वाह! **(ग)** 1. अच्छा! 2. ओह! 3. छिः! 4. सावधान! 5. अरे! 6. हैं! 7. शाबाश! **(घ) 1.** विस्मय, घृणा, हर्ष, शोक, प्रशंसा आदि मन के भावों को प्रकट करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं। **2. हर्षबोधक** – वाह! आहा! **स्वीकृतिबोधक** – हाँ! अच्छा!

अभ्यास-22. पद-परिचय

(क) 1. उत्तम पुरुष सर्वनाम 2. जातिवाचक संज्ञा 3. उत्तम पुरुष सर्वनाम 4. भविष्यत् काल 5. विशेषण 6. सर्वनाम 7. क्रियाविशेषण 8. उत्तम पुरुष सर्वनाम **(ख)** 1. जातिवाचक 2. क्रिया विशेषण 3. विस्मयादिबोधक 4. विस्मयादिबोधक 5. व्यक्तिवाचक 6. विशेषण 7. विशेषण 8. विशेषण, सर्वनाम, क्रिया विशेषण 9. अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, व्यक्ति वाचक संज्ञा 10. व्यक्तिवाचक, विशेषण **(ग)** स्वयं करें **(घ)** 1. पद की प्रकृति का परिचय देना, उसकी भूमिका के बारे में बताना तथा उसका अन्य पदों से संबंध बताना पद-परिचय कहलाता है। 2. वाक्य में प्रयोग होने पर शब्द 'पद' बन जाता है।

अभ्यास-23. पदबंध

(क) 1. विशेषण पदबंध 2. क्रिया-विशेषण पदबंध **(ख)** 1. क्रिया-विशेषण 2. क्रिया 3. सर्वनाम 4. संज्ञा 5. क्रिया-विशेषण **(ग)** 1. सर्वनाम 2. संज्ञा 3. विशेषण 4. संज्ञा 5. विशेषण 6. क्रिया-विशेषण **(घ) 1.** जब कई पद मिलकर एक इकाई का कार्य करें, तब उस इकाई को पदबंध कहते हैं। **2.** पदबंध के पाँच भेद हैं–1. संज्ञा पदबंध

2. सर्वनाम पदबंध 3. विशेषण पदबंध 4. क्रिया पदबंध 5. क्रिया-विशेषण पदबंध।

अभ्यास-24. वाक्य

(क) 1. मेरा पुराना मित्र केशव 2. रवि को कक्षा का मॉनीटर बनाया 3. मिश्र **(ख)** 1. प्रश्नवाचक 2. निषेधवाचक 3. विधानवाचक 4. आज्ञावाचक **(ग)** 1. सरल 2. संयुक्त 3. संयुक्त 4. मिश्र **(घ) 1.** सार्थक शब्दों के व्यवस्थित समूह को ही वाक्य कहते हैं। वाक्य के दो मुख्य अंग होते हैं-उद्देश्य, विधेय। **उद्देश्य-** वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे–झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेज़ों के सामने नहीं झुकीं। **विधेय-** उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, वह विधेय कहलाता है। **2.** रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-**सरल वाक्य**–महेश आया। **संयुक्त वाक्य**–आप चाय पिएँगे या कॉफी। **मिश्र वाक्य**–जब मैं छोटा था, तब साइकिल चलाता था। **3.** अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–(i) **विधानवाचक**–वह आया। (ii) **निषेधवाचक**–मैं यह कार्य नहीं करूँगा। (iii) **प्रश्नवाचक**–आप कब आए? (iv) **आज्ञावाचक**–तुम यहाँ से चले जाओ। (v) **विस्मयवाचक**–वाह! कैसा सुंदर दृश्य है। (vi) **संदेहवाचक**–शायद आज वर्षा हो। (vii) **इच्छावाचक**–ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे। (viii) **संकेतवाचक**–यदि वर्षा होती, तो फ़सल अच्छी होती।

अभ्यास-25. अलंकार

(क) 1. उपमा 2. अनुप्रास 3. उपमा 4. रूपक 5. रूपक 6. अतिशयोक्ति 7. अनुप्रास 8. रूपक 9. उत्प्रेक्षा।

अभ्यास-26. विराम-चिह्न

(क) 1. ठहरना 2. उपविराम चिह्न 3. ; 4. '....' **(ख)** 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗) **(ग)** स्वयं करें **(घ) 1.** सामान्य कथन वाले सभी प्रकार के वाक्यों-सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों के अंत में पूर्ण विराम का चिह्न लगाया जाता है; जैसे–राजू ने कहा कि वह कल आएगा। **2.** वक्ता अथवा लेखक की बात को ज्यों-का-त्यों दर्शाने के लिए दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–नेताजी का आह्वान था- ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।'' **3.** यह चिह्न निर्देशक चिह्न के रूप में पाई की तरह प्रयुक्त किया जाता है। किसी विशिष्ट वाक्य के संबंध में कोई सूचना अथवा निर्देश देने के लिए भी इसका प्रयोग होता है। **4.** (क) वाह! तुमने कमाल कर दिया। (ख) अरे भाई! तनिक ठहर जाओ। **5.** (क)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (ख) निम्न उदाहरण प्रस्तुत हैं:

अभ्यास-27. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) 1. अंग-अंग टूट रहा है। 2. नौ-दो ग्यारह हो गया 3. आँखें चुराने 4. आग बबूला हो **(ख)** 1. बाँछें खिलना 2. नाक में दम करना 3. ईंट का जबाब पत्थर से देना 4. जी चुराना 5. उल्टी गंगा बहाना **(ग)** घोड़े बेचकर सो रहे; करवटें बदल रहा; तारे गिनते-गिनते; मेरी आँख लगीं, नौ दो ग्यारह हो गए। **(घ)** स्वयं करें **(ङ)** **1.** मुहावरे पूरे वाक्य न होकर वाक्यांश होते हैं। ये वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं। **2.** लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है। यह अपने आप में पूर्ण इकाई होती है। प्राय: इसका प्रयोग किसी बात का समर्थन या खंडन करने के लिए किया जाता है। **3.** मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा को रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है। मुहावरे पूरे वाक्य न होकर वाक्यांश होते हैं। ये वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं। लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है। यह अपने आप में पूर्ण इकाई होती है। प्राय: इसका प्रयोग किसी बात का समर्थन या खंडन करने के लिए किया जाता है।

खंड 'ख' : रचना

स्वयं करें।

अलंकार हिंदी व्याकरण

Interactive Resources

- Download the free app 'Green Book House' from google play.
- Free online support available on 'www.greenbookhouse.com'.
- Ample teacher's support available.

GREEN BOOK HOUSE
(EDUCATIONAL PUBLISHER)
F-214, Laxmi Nagar, Mangal Bazar, Delhi-110092
Phone : 9354766041, 9354445227
E-mail : greenbookhouse214@gmail.com
Website: www.greenbookhouse.com